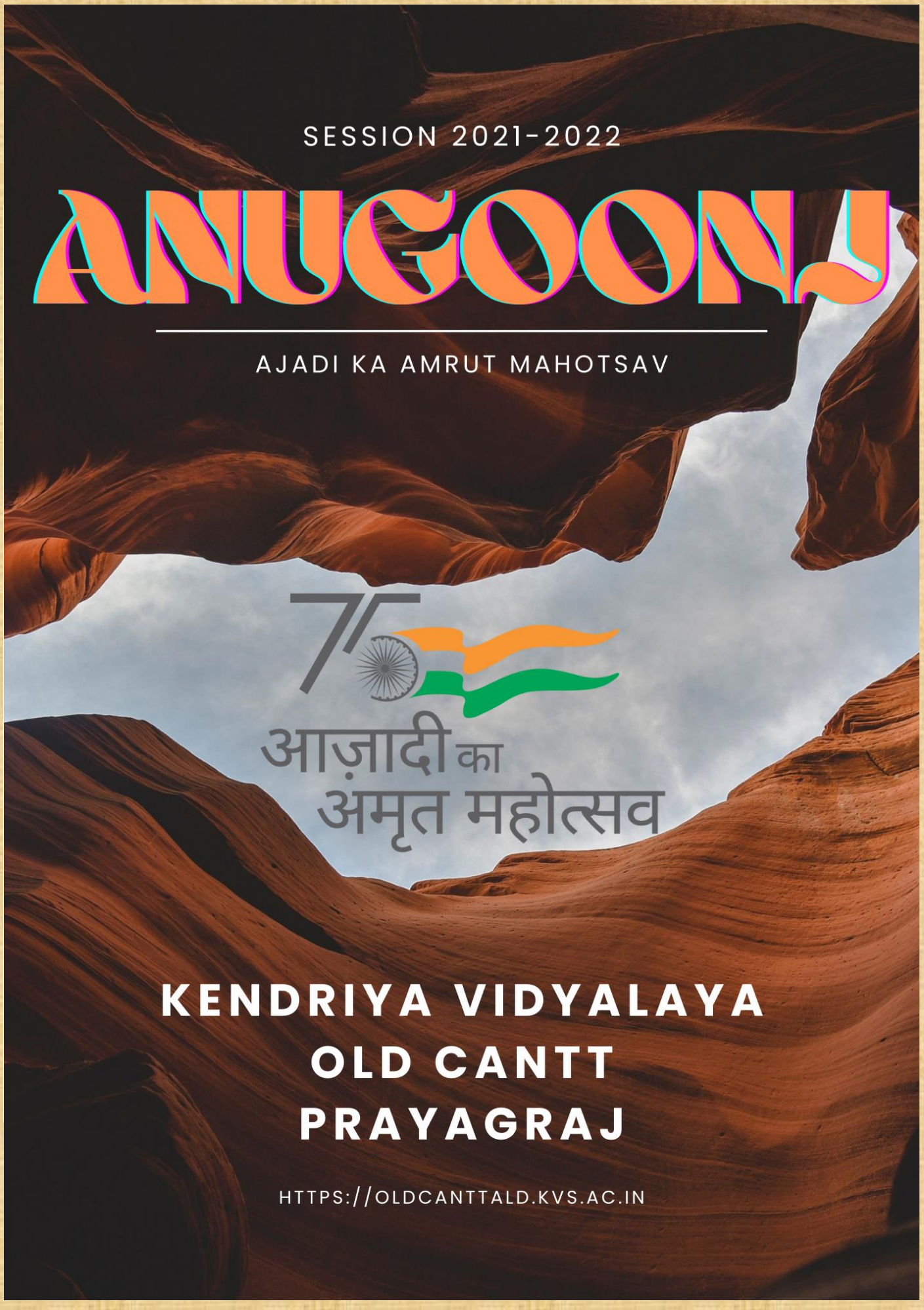
SESSION 2021-2022
ANUGOONJ
AJADI KA AMRUT MAHOTSAV
आज़ादी का
अमृत महोत्सव
KENDRIYA VIDYALAYA
OLD CANTT
PRAYAGRAJ
HTTPS://OLDCANTTALD.KVS.AC.IN

केन्द्रीय विद्यालय ओल्ड कैंट,इलाहाबाद

अनुकृति ई विद्यालय पत्रिका 2021-22

मुख्य संरक्षक -	श्री डी मणिवन्नन	उपायुक्त के.वि.एस. (क्षे.का.) वाराणसी
संरक्षक -	श्री बी दयाल	सहायक आयुक्त के.वि.एस. (क्षे.का.) वाराणसी
	श्री राजीव कुमार तिवारी	प्राचार्य
परामर्श -	श्री अंशुल प्रसाद	उप प्राचार्य
	श्री हरि ओम पाण्डेय	मुख्याध्यापक
सम्पादक मंडल – प्रधान सम्पादक	श्री एस के द्विवेदी	स्नातकोत्तर शिक्षक
शिक्षक सदस्य	श्री आलोक कुमार संघमित्र	स्नातकोत्तर शिक्षक
	श्री ए एन तिवारी	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
	श्रीमती रमा देवी पाण्डेय	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
	श्रीमती डी एस नवीन	प्राथमिक शिक्षक

Message of Chairman

I feel profoundly delighted to know that the principal, teachers, staff, and students of KV Old Cantt, Prayagraj are bringing out an E-magazine - the bouquet of reflections - giving vent to a plethora of cravings of the blooming buds of the Vidyalaya.

I commend the creative minds of the teachers, the editorial board, coordinator E-magazine for the hard work put in, the continued support of the Vice-Principal, and above all worthy guidance of the Principal for the accomplishment of the E-magazine.

I wish you all the best for a bright future!

Chairman

VMC

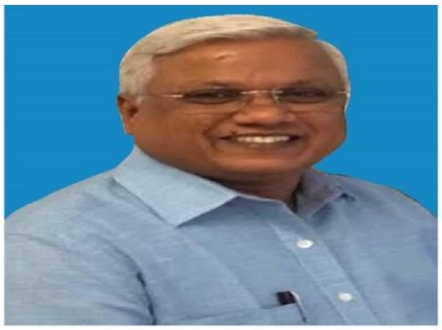

Message of Deputy Commissioner

Message for Vidyalaya e-Patrika

It instills a deep sense of satisfaction and pride to be signing the message for the annual E-magazine 'ANUGOONJ' of KV Old Cantt, Prayagraj.

I give my compliments to the principal and his team for having imparted holistic education to the students in an innovative manner, despite the challenges of disruption in regular function of the Vidyalaya due to COVID-19.

As there is no act without imagination, this Vidyalaya's E-magazine 'ANUGOONJ' marks Vidyalaya's growth, unfolds its imaginations, and gives life to its thoughts and aspirations. It unleashes a wide spectrum of creative skills ranging from writing to editing and even designing the E-magazine. I congratulate the entire team for their hard work and dedication that has resulted in the publication of this issue of the Vidyalaya's E-magazine.

With warm wishes and God's blessings.

(D Manivannan)
Deputy Commissioner

The Principal
Kendriya Vidyalaya
Old Cantt. Prayagraj

सहायक आयुक्त की बात .....

प्रिय राजीव कुमार तिवारी जी !

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि विद्यालय के छात्र - छात्राओं एवं शिक्षक समुदाय की विविध नूतन संकल्पनाओं एवं उनके सृजनात्मक चिन्तन को मूर्त स्वरूप में लेकर सत्र : 2021-22 की विद्यालय 'ई – पत्रिका' शीघ्र ही प्रस्तुत होने जा रही है; जिसके लिए आप तथा आपके नेतृत्त्व में इसके प्रकाशन से जुड़े सभी लोग प्रशंसा एवं बधाई के पात्र हैं ।

वस्तुत: विद्यालय पत्रिका किसी भी विद्यालय का प्रतिबिम्ब होती है; क्योंकि इसमें विद्यालय के गौरवपूर्ण पल, इसकी विशिष्ट उपलाब्धियाँ और इसकी अति प्रमुख गतिविधियों के साथ- साथ छात्र - छात्राओं के सृजनात्मक कौशल की मौलिकता, सामर्थ्य, सार्थकता और चिन्तन - शक्ति के भी दर्शन होते हैं |

विद्यालय पत्रिका के पटल पर छात्र- छात्राएँ अपने अन्तर्मन के सुसुप्त बीज (चिन्तन) अंकुरित करके लेख, कविता, संस्मरण आदि पुष्पित व पल्लवित वृक्ष के रूप में प्रस्तुत करके स्वयं आनंदानुभूति करते हुए दूसरों को भी आनंदित करके यश प्राप्ति भी करेंगे | निश्चय ही इस 'ई-पत्रिका' की कविताएँ, लेख, कहानियाँ, पहेलियाँ, चुटकुले, संस्मरण तथा ऐतिहासिक - भौगोलिक - वैज्ञानिक तथ्य पाठकों को इन बाल-रचनाकारों की कल्पनाशीलता, चिंतन शक्ति और सृजनात्मकता का परिचय देते हुए प्रेरित करेंगे |

"संकल्पनाओं को बाल - मन की, मूर्त करने के लिए ;
चिंतन को उनके अंकुरण के, अवसर देने के लिए !
आप. गुरुजन, पत्रिका के, संपादक गणों को साधुवाद :
इस 'ई- पत्रिका' का सुकलेवर, यों दिखाने के लिए !!"

विद्यालय ओल्ड कैण्ट परिवार को अनंत हार्दिक शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद सहित |

(बिशुन दयाल)
सहायक आयुक्त
के.वि.सं. वाराणसी संभाग

Message from Nominee Chairman

Learning takes place if the willingness to learn more inspires us every moment.

It gives me immense pleasure to unveil the new edition of the school magazine of Kendriya Vidyalaya Old Cantt, Prayagraj. Learning is a life-long process which involves multi-dimensions. A magazine is one of such.

The efflorescence of a child to explore oneself is very essential during this pandemic period. So, providing a platform to them is a moral duty as well as responsibility of the educators. I am delighted to know that Kendriya Vidyalaya Old Cantt Prayagraj has set an example for other schools, as an abode of discipline and advanced learning. I hope the Vidyalaya will keep on imbibing values and keep on importing meaningful information and worthy knowledge also to all its stakeholders by every possible means.

I wish to congratulate the entire staff of the school for meeting this challenge with remarkable patience and resilience. I convey my best wishes to them in their onward journey towards ensuring a promising future for every learner.

Nominee Chairman

VMC

From the desk of Principal

PHOTO

It gives me colossal pleasure in bringing up the E-magazine of our vidyalaya for the session 2021-22 "Anugunj" to your device. The journey of this magazine to your device is not simple but contains a plethora of concerted efforts of our students and team of teachers.

A vidyalaya magazine is an attempt to view the panoramic view crafted by brains and hearts of our young talents.

We, the students and community of KV Old Cantt Allahabad extend our gratitude to our Chairman, VMC Brig. S N Singh, Deputy GOC 4 Inf Div HQ; Nominee Chairman, VMC Col Antony Joseph, SO1 Edn 4 Inf Div HQ for their encouraging patronage and regular and guided support in our various activities which are enabling us to evolve every moment to new heights.

We are grateful to our worthy Deputy Commissioner, Sh D Manivannan Sir for his continuous guidance and able leadership that sets higher standards of achievement benchmarks for us to accomplish and grow as pace setters in the field of education.

We are thankful to our Assistant Commissioner, Sh Bishun Dayal Sir, who plays a local guardian from distance role, by extending us of his strict vigil and guidance in all our efforts as well as our day to day activities.

I take the opportunity to convey my heartfelt thanks to the Editorial board members, students and teachers who have contributed with their valuable expressions and the IT personal who have shaped the magazine.

Thanks to one and all

Jai Hind

Rajeev Kumar Tiwari
(Principal)

From the desk of Vice-Principal

"अनुगूँज " सिर्फ विद्यालय की इ पत्रिका ही नहीं है अपितु यह वास्तव में अपने नाम के अर्थ का वास्तविक प्रकटीकरण है। यह नन्हें नन्हें प्यारे बच्चों की अद्भुत रचनाशीलता की अनुगूँज है। यह अनुगूँज है सामान्य में से विशिष्ट के चयन की विशेष क्षमता का। यह प्रकटीकरण है उस ज्ञान का जो विद्यालय के अनुभवी व योग्य शिक्षकों ने छात्रों को दिया है। मैं उन सभी छात्रों को शुभकामनायें देता हूँ जिनकी रचना का चयन इस वर्ष की पत्रिका में किया गया है और वे छात्र भी प्रसंशा के पात्र हैं जिन्होंने ने प्रयास किया।

मैं धन्यवाद देता हूँ सम्पादक मंडल को जिन्होंने अपने कठिन प्रयास से पत्रिका को ऐसा बनाया जिससे इसकी "अनुगूँज" पाठक के मानस पटल के साथ ह्रदय तक पहुंचने में समर्थ हो गयी है।

मैं आभार प्रकट करता हूँ परम आदरणीय उपायुक्त महोदय का और सहायक आयुक्त महोदय के जिनके आशीर्वाद और मार्गदर्शन से विद्यालय उत्तरोत्तर बढ़ रहा है.

मैं आभारी हूँ आदरणीय अध्यक्ष विद्यालय प्रबंध समिति व नामित अध्यक्ष विद्यालय प्रबंध समिति का जिनके सहयोग व छत्रछाया में विद्यालय पुष्पित - पल्लवित हो रहा है.

मैं ह्रदय से आभार प्रकट करता हूँ आदरणीय प्राचार्य जी का जिनकी पहल और मार्गदर्शन में विद्यालय ने एक और उपलब्धि हासिल की।

शुभकामनायें।

अंशुल प्रसाद
केंद्रीय विद्यालय
ओल्ड कैंट प्रयागराज

प्रधानाध्यापक की लेखनी से

समस्त विद्यालय परिवार के लिए अत्यंत हर्ष का विषय एवं अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के सुअवसर के रूप में विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन होता है । जैसा कि केंद्रीय विद्यालय संगठन अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रतिबद्ध है, की ही कड़ी में उनकी मौलिक रचनात्मकता की अभिव्यक्ति के धरातल पर साकार करने हेतु उक्त सुअवसर प्रदान किया जाता है । प्राथमिक विभाग के नन्हे मुन्ने बच्चों से लेकर माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर तक के छात्र-छात्राएं अपनी लेखन क्षमता तथा अभिव्यक्ति के लड़खड़ाते कदम रखते हुए सिद्ध हस्त लेखक , कवि एवं कलाकार के रूप में स्थापित होने की ओर अग्रसर एवं आत्मविश्वास निर्माण में विद्यालय पत्रिका में दिए गए योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं व्यापक भूमिका निभाते हैं ।

अतः उक्त अवसर पर मै अपने विद्यार्थियों की उत्कृष्ट सर्जना के प्राकट्य हेतु माँ वीणापाणी से करबद्ध प्रार्थनारत हूँ । हमारे शिक्षक वृन्द अपने प्रिय विद्यार्थियों से उनकी सर्वोत्कृष्ट रचनात्मक अभिव्यक्ति कराने में सक्षम होंगे यही मेरी अभिलाषा है ।

सादर सधन्यवाद

हरिओम पाण्डेय
मुख्याध्यापक
के.वि.ओल्ड कैन्ट प्रयागराज

From the Chief Editor's Desk:-

Readers!

Our Vidyalaya members indite e-magazine "Impressions & Reflections" -the embeded varied creative geners . This is their spontaneous expressions - in English, Hindi and Sanskrit. Learning is our thrust.

We feel obliged to our Chairman VMC…. for his guidance, and his kind message for our vidyalya e-magazine.

We feel thankful to our Nominee Chairman,V M C,….. for his continued support and the message for the Vidyalaya e-magazine.

Our Chief Patron Honourable Mr D. Manivanan, The Deputy Commissioner, K.V.S, R.O. Varanasi has constantly been inspirational guiding force for us all. I offer my heart felt thanks to honourable Sir, for his kind message for e-megazine too.
Patron honourable Mr B. Dayal, The Assistant Commissioner, has through out been the source of inspiration, and we feel highly obliged to honourable sir, for encouraging message for the same.

The contribution of the head of the family, Respected Rajeev Kumar Tiwari, The Principal of our vidyalaya has made the things easy and accessible in all the spheres in vidyalaya
Within reach. Thanks are due to sir to make it easy to bring this out and for his kind message as well.

The Vice Principal, Mr. Anshul Prasad always encourages and supports each one of us. Thanks to him for his support and message for e-magazine.

Thanks are due to all the members of staff, office, sub -staff, and the parents. & all those who contributed in publication of e -megazine.

I thank the students and teachers for their creations, contributed in the e-magazine.

I thank the members of Editorial Board for the commendable efforts put in by them. I, also, thank the readers in advance for their kind reading & positive suggestions!

All the best to one and all!
THANK YOU

S K DWIVEDI
P G T -English

संपादकीय

केन्द्रीय विद्यालय ओल्ड कैंट, प्रयागराज विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विद्यालयी ई-पत्रिका रूपी पुष्प आपको सौंपते हुए अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है। आशा है आप सभी अपनी प्रतिक्रिया और आशीर्वचन अवश्य प्रदान करते रहेंगे।

विद्यालय ई-पत्रिका का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की रचनात्मकता का विकास करना तथा उनके भावों, विचारों एवं चिंतन की मौलिक अभिव्यक्ति को आप सभी तक पहुँचाना है। वास्तव में शिक्षा का भी यही मुख्य उद्देश्य है कि विद्यार्थियों की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करना जिससे विद्यार्थी स्वयं के लिए व समाज के लिए उपयोगी बन सकें और देश के निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। इसीलिए पत्रिका में अधिकतम स्थान विद्यार्थियों की रचनाओं को प्रदान किया गया है। गुणवत्ता एवं संपादन की दृष्टि से यह पत्रिका केन्द्रीय विद्यालय संगठन की गरिमा को अभिसिंचित करने वाली है।

मैं विशेष आभार व्यक्त करता हूँ उपायुक्त, वाराणसी संभाग श्री डी मणिवन्नन एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष .....के प्रति जिनके कुशल संरक्षण, प्रेरणा एवं सकारात्मक सहयोग से विद्यालय नित नई ऊंचाइयों को स्पर्श कर रहा है।

पत्रिका के प्रकाशन का श्रेय हमारे विद्यालय के विद्वान, कर्मठ एवं कुशल प्रशासक प्राचार्य श्री राजीव कुमार तिवारी जी को है, जो हम सभी को प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन का सशक्त आधार प्रदान करते रहते हैं ।

पत्रिका के प्रकाशन में उप-प्राचार्य श्री अंशुल प्रसाद जी द्वारा प्राप्त अक्षुण्ण सहयोग सराहनीय है। मैं अपने सभी प्रबुद्ध शिक्षक सहयोगियों (जिन्होंने विषयानुकूल स्तम्भ सामग्री के संकलन, लेखन, चयन एवं संपादन में आशातीत सहयोग प्रदान किया) उन के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी के प्रति भी आभारी हूँ, जिनके मौलिक अभिव्यक्ति एवं सहयोग से पत्रिका की प्रकाशन सामग्री उपलब्ध हो सकी।

मैं विद्यालय पत्रिका के संपादक मंडल के सभी सदस्यों के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिनका समर्पण एवं सहयोग सकारात्मक एवं सराहनीय रहा।

आलोक कुमार संघमित्र- परास्नातक शिक्षक (हिंदी)

विषय-सूची * INDEX

क्रम. संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
	हिन्दी विभाग	
1	स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा : हिंदी	
2	हिन्दी : हमारी पहचान	
3	देश की शान बेटियाँ	
4	बालिका दिवस	
5	गुरु महिमा	
6	गरीबी अभिशाप है साहब; आज साबित हो गया	
7	वीर गाथा	
8	बेटी	
9	हिन्दुस्तान में हिंदी	
10	कहानी : रमन और नाई	
11	कहानी : गुरू द्रोण	
12	कहानी : कृष्ण-सुदामा	
13	बढ़े चलो	
14	कोरोना	
15	किसानों की पीड़ा	
16	थोड़ा दुनिया से हटकर चल	
17	गुरु महिमा	
18	"नारी सशक्तिकरण एक सच्चाई है"	
19	शिक्षा	
20	आजादी का अमृत महोत्सव : नए विचारों का अमृत	
21	शौर्य और साहस की प्रतीक : रानी लक्ष्मीबाई	

22	आज़ादी के नायक	
23	एक भारत श्रेष्ठ भारत (प्रस्तावना)	
24	देश की मिट्टी	
25	मातृ भूमि (समर्पण गीत)	
	संस्कृत विभाग	
26	जीवनस्य साफल्यम्	
27	गीतामृतम्	
28	बीरबलस्य स्वामिभक्ति :	
29	जननी	
30	एहि एहि वीर रे	
31	मनसा सततम् स्मरणीयम्	
	ENGLISH SECTION	
32	The Peace that God Brings	
33	Self Impowered Woman	
34	World Earth Day	
35	The Summer	
36	Care yourself	
37	Believe in Yourself	
38	The song of the free	
39	A Smile	
40	Don't Quit	
41	Fun Fact	
42	Everything at Once	
43	Interesting Facts about India	
44	Top 10 Interesting Fact About Amazon Rainforest.	
45	A TEACHER IS LIKE A LAMP	
46	Fun facts about our body	
47	The Proud Rose	

हिन्दी विभाग

स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा : हिंदी

भारत देश में कई भाषाओं का समावेश है। सभी भाषाओं में हिंदी को देश की सबसे महत्त्वपूर्ण भाषा माना गया है । हिंदी आज दुनिया में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषाओं में से एक है। इसे सम्मान देने के लिए हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस भाषा को बोलने और समझने में किसी को कोई परेशानी नहीं होती है । हिंदी विश्व की संभवत: सबसे वैज्ञानिक भाषा है । यही वजह है कि भारत के उत्तर से दक्षिण एवं पूरब से पश्चिम तक देश के सभी नागरिक हिन्दी भाषा को आसानी से बोल समझ लेते हैं ।पहले के समय में अँग्रेजी का ज्यादा चलन नहीं हुआ करता था, तब इसी भाषा में लोग विचार-विनिमय किया करते थे । किन्तु बदलते युग के साथ अँग्रेजी ने भारत की जमीं पर अपने पाँव पसारे और आज बोलचालके साथ-साथ व्यवसाय एवं तकनीक की भी भाषा बन गयी है । माना कि हिंदी भाषा तकनीकी ज्ञान से दूर है, लेकिन आज भी तकनीकी एकता से अधिक मानवीय एकता महत्व रखती है। मानवीय एकता तब आएगी जब लोगों में आपसी समझ होगी और मतभेद कम होगा। यह मतभेद भाषा का मतभेद है। माना अंग्रेजी आज की जरूरत है, लेकिन क्या जरूरत के लिए नींव को छोड़ा जा सकता है ? यदि हिंदी को अलग कर दिया जाये तो गांव और शहरों में बढ़ता मतभेद और गहरा हो जाएगा, जो देश के विकास में एक बड़ी बाधा है। भाषा ही व्यक्ति को जोड़ती है। स्वयं हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने अमेरिका में जाकर हिन्दी भाषा में भाषण दिया था। यह हमारे लिए गर्व की बात है। हिन्दी भाषा हमारे स्वाभिमान का प्रतीक है । जिस प्रकार हम तिरंगे को सम्मान देते हैं वैसे ही हमारी भाषा भी सम्माननीय है। । राष्ट्रीय एकता एवं देश के निरंतर विकास के लिए स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा : हिंदी हम सब की जरूरत है, जिसके लिए सभी को एक साथ आगे आना जरूरी है और इस दिशा में हिंदी को वास्तविक सम्मान मिले यह अत्यंत आवश्यक है।

समृद्धि श्रीवास्तव - 9 स

हिन्दी : हमारी पहचान

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान प्रचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है। देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ अंग्रेजी पूरे देश पर हावी होती जा रही है। हिन्दी देश की राजभाषा होने के बावजूद आज हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। हिन्दी जानते हुए भी लोग हिन्दी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकने लगे हैं। इसलिए सरकार का प्रयास है कि हिन्दी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार किया जा सके, सरकार हिन्दी दिवस के दिन देश के नागरिकों से निवेदन किया करती है कि वे अपने बोलचाल की भाषा में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें। हिंदी भाषा के प्रयोग से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी तथा हमारी पहचान अक्षुण्ण बनी रहेगी ।

हर्षिता 9-अ

श्रम का महत्व

श्रम का अर्थ है- अत्यधिक मेहनत । आज श्रम हमारे जीवन की जरूरत है, हम रोज किसी न किसी कार्य को पूर्ण करने तथा अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु श्रम करते हैं। हमें छोटी वस्तुओं की प्राप्ति के लिए भी थोड़ा श्रम अवश्य करना होता है। अगर सही दिशा में श्रम किया जाए तो लक्ष्य प्राप्ति के आसार बढ़ जाते हैं। हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ईमानदारी से श्रम करने और अपने कार्य के प्रति समर्पित रहने की आवश्यकता होती है। आज का किया श्रम हमारे भविष्य का निर्माण करता है। यह सफलता का मार्ग हैं। अपने कार्यों को उनके लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए श्रम करना अनिवार्य हैं। जो व्यक्ति श्रम करने से परहेज करता है उसे मानसिक असंतोष, असफलताओं एवं शारीरिक विकारों का सामना करना पड़ता है। श्रम के बिना फल की प्राप्ति करना संभव नहीं है। व्यक्ति अगर श्रम न करे और यूं ही किसी वस्तु की प्राप्ति हो जाए तो व्यक्ति उस वस्तु का मूल्य नहीं समझेगा। ऐसा करने से सफल होना संभव नहीं। सफल व्यक्तियों नें श्रम को ही लक्ष्य प्राप्ति का आधार बनाया है। श्रम द्वारा रंक को भी राजा बनने से कोई नहीं रोक सकता। श्रम जीवन का आधार है। एक सुखी जीवन की चाह रखने वाले व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह ईमानदारी से अपना कर्म करे और फल की चिंता न करे।

सुष्मिता कुशवाहा 11-ई

देश की शान बेटियाँ

भारत के भविष्य
को उज्ज्वल कर
इतिहास बनाना चाहती हूँ।
स्वयं से ही,
कभी तलवार तो कभी कलम से ही
संदेह मिटाना चाहती हूँ
नाम एक हैं, सपने अनेक
हर सपने को यथार्थ करना चाहती हूँ
कभी लक्ष्मी तो कभी दुर्गा बन हर रूप दिखाना चाहती हूँ
लक्ष्मीबाई न बन सकी तो गार्गी बनना चाहती हूं
क्रोध से लेकर करुणा तक सब भाव दिखाना चाहती हूँ
मैं लड़की हूँ. . .लड़की ही रहना चाहती हूँ

माहिका तिवारी कक्षा
9-अ

गुरु महिमा

गुरु जन का साथ हो तो किस बात की कमी है,
ये आसमान हमारा और सारी ये जमीं है।
मुश्किल नहीं है कुछ भी सब कुछ यहाँ सरल है,
सर पे हो हाथ उनका तो जीवन यहाँ सफल है ।
गुरु वचन याद हो तो ये भाग्य भी बदलता
ये काल भी रुक जाए और समय साथ रहे चलता ।

सन्मार्ग आके तुमको एक मार्ग खुद दिखाये
स्वर साज संग लेकर, विद्या तुम्हें बुलाये ।
गुरु मुख से निकली वाणी एक शक्ति है बन जाती,
सीधे लगे जो दिल पर किस्मत है बदल जाती ।
कुछ भी कहीं करू पर ध्यान गुरू में लगाऊँ
अरे ! पूजता रहूँ मैं, चरणों में शरण पाऊँ ।
ये आस हो जो पूरी तो कोई मोह नहीं है |
जीवन भी गुजर जाये, तो कोई छोह नही है ।

आनंद उपाध्याय 12-द

गरीबी अभिशाप है साहब ; आज साबित हो गया

कोई साइकिल, कोई मोटर तो कोई पैदल ही घर चल दिया
बीमारी से ज्यादा जिंदगियां तो हादसा खा गयी
बिखरी रोटियाँ, टूटे चप्पल, फैला खून, गूंजती चीत्कार ये कह रही
'**गरीबी अभिशाप है साहब, आज साबित हो गया** ।
महलों आशियानों में बैठे लोगो की संवेदनाएं इन्टरनेट पर झलकती है
पर कही दूर एक माँ की कोख़ जो सूनी हो गयी सड़कों पर पड़ी रोती तड़पती है ।
दो वक्त की रोटी और सहारे को छोड़कर
भला क्यों वापस आएगा, कोई गुज़ारे को छोड़कर
ये हालात मज़दूर को मजबूर कर गया,
गरीबी अभिशाप है साहब, आज साबित हो गया ॥

शालू सिंह 11-ई

वीर गाथा

कलम क्रोधित हो पूछती है कि क्या लिखूँ
वीरों की अद्भुत शहादत पे
वीरों की शहादत लिखूँ या उनकी अमर कहानी
भू , वसुंधरा के लिए तुमने दी अपनी कुर्बानी
बिलखती ममता लिखूँ या उबलते जज्बात लिखूँ
या फिर सूनी माँग की टूटी उम्मीद
कहो किन शब्दों मे उन लालो / वीरों के कर्ज लिखूँ
सूनी है बाँहें भीगा है आंचल
शब्दों से निकलती है चीख यही हर पल
क्या लिखूँ, क्यों लिखूँ, कब तक लिखूँ
कैसे सहूँ इस दर्द को जिसका ना कोई अंत है
कागज भी कम पड़ जाएंगे पर इन महान वीरों की गाथाएं
अमिट है, अनंत है, अनंत है।

जय हिंद ॥
शालू सिंह 11 -ई

बेटी

पर अधिकारों से हारी है।
बेटी को जैसे जना नहीं,

बेटी का कमरा तो बना नहीं।।

हर घर की यही कहानी है,
बेटी तो घर से जानी है।
ये रश्म हमें भी निभानी है,
पर मन में क्यों बेईमानी है।।

क्यों भाई नहीं चाहे घर में,
बहनों को अधिकार मिले।
क्यों माँ का मन न बन पाया,
बेटी को घर-बार मिले।।

बेटी के अधिकारों को,
खैरात बनाकर रख डाला।
बेटी की जिम्मेदारी को,
बारात बनाकर रख डाला।।

बेटी हूँ मैं लड़ सकती हूँ ,
इन नारों की कमी नहीं ।
गौर से देखो बाबुल के घर,
हर बेटी की जमीं नहीं।।

-अर्चना सिंह चौहान, प्रा. शि.

हिन्दुस्तान में हिंदी

हिन्दुस्तान में हो गया, हिंदी का यह हाल,
हिन्दी मास मनायें हम, बिन चूके हर साल,
हिन्दी का स्मरण हो वर्ष में बस एक माह,
बाकी पूरे वर्ष भर, हिन्दी भरती आह ।

अंग्रेजी का हो गया, ऐसा भूत सवार,
संडे-संडे कह रहे, भूल गए रविवार,
अब बाबू जी मर गए, जिंदा हो गए डैड,
आत्मीयता भी हो गई, अंग्रेजी में कैद ।

जो बोले हिन्दी यहाँ, समझें उसको हीन,
अंग्रेजी के सामने, हिन्दी की तौहीन,

माना अच्छी बात है,हर भाषा का ज्ञान,
किन्तु कहाँ तक उचित है, हिन्दी का अपमान ।

हिन्दी के उपयोग में, क्यों इतना संकोच,
किस भाषा में पाओगे, हिन्दी जैसा लोच,
हिन्दी कैसे बन सके ,हर भाषा का ताज,
हमने इसको कर दिया, परिचय का मोहताज ।

क्यों यह हिंदी दिवस है, क्यों यह हिन्दी माह,
क्या हिन्दी का रहेगा, बस बतना इतिहास,
हिन्दी में बाते करें, हिन्दी में हो काम,
तब हिन्दी पाएगी,सम्मानित स्थान।

-अर्चना उपाध्याय, 9-ब

कहानी : रमन और नाई

एक गाँव में रमन नाम का एक लड़का था। वह हमेशा अपनी होशियारी दिखाने के चक्कर में रहता था । एक दिन वह एक नाई की दुकान पर गया और उससे मजाक करने की सोची। वह नाई की शीशे के सामने कुर्सी पर बैठ गया। नाई ने रमन से पूछा, "क्या बात है।" रमन ने कहा-'जरा मेरी दाढ़ी बना दो।' नाई को रमन की शैतानी समझ में आ गई। उसने विनम्रतापूर्वक कहा, "हाँ-हाँ बैठिए दाढ़ी अवश्य बनाऊँगा । नाई ने रमन के कंधे पर तौलिया लपेट दिया । उसने ब्रश से उसके चेहरे पर झागदार साबुन लगाया । पुनः अपने अन्य कामों में लग गया। कुछ देर इंतजार करने के पश्चात रमन नाई पर नाराज होते बोला- आखिर इतनी देर से मुझे इस तरह क्यों बैठा रखा है। रमन की बात सुनकर नाई हँस पड़ा। और उसने हँसते हुए उत्तर दिया- "अभी मैं आपकी दाढ़ी उगने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" रमन चुपचाप मुँह साफ कर दुकान से बाहर चला गया। फिर उसने कभी किसी के साथ होशियारी नहीं दिखाई।

शिक्षा- कभी भी अपने से बड़ों के साथ मजाक नहीं करना चाहिए ।

संकलनकर्ता - तमन्ना अख्तर, 9-स

कहानी : कृष्ण-सुदामा

[संकेत बिंदु - द्वापरयुग, कृष्ण सुदामा, मित्रता, गुरुकुल, गुरुमाता, लकडियाँ, जंगल,आँधी तूफान, वर्षा]

यह कथा द्वापरयुग की है, जब श्री कृष्ण छोटे थे। उस समय उनका सबसे प्रिय मित्र सुदामा था। श्री कृष्ण और सुदामा एक साथ गुरुकुल में शिक्षा लेते थे। गुरुमाता उन्हें अपने खुद के पुत्र के समान प्यार करती थीं। एक बार श्रीकृष्ण और सुदामा जंगल मे लकड़ियाँ लेने जा रहे थे तो गुरुमाता ने सुदामा को कुछ चने देते हुए कहा कि इसे तुम और कृष्ण मिलकर खा लेना। फिर वे जंगल चले जाते हैं। लकड़ियाँ लेकर जब वे गुरुकुल के लिए लौटने ही वाले थे कि तभी बारिश होने लगती है। दोनों अलग-अलग वृक्ष पर चढ़ जाते हैं।

वो बहुत भूखे होते हैं। सुदामा सोचते हैं कि वे नीचे तो जा नहीं सकते इसलिए वह अकेले ही चने खाने लगते हैं, खाने के कारण उनके मुँह से आवाजें आती । श्री कृष्ण के कारण पूछने पर सुदामा कहते कि ठंड के कारण दाँत कटकटा रहे हैं। बारिश रूक जाती है, वे गुरुकुल लौट जाते हैं। गुरुकुल लौटकर सुदामा अपने द्वारा किए गए कार्य के बारे में सोचते हैं। उन्हें बहुत बुरा लगता है। फिर गुरुमाता को पता चलता है तो वो उन्हें समझाती हैं और कहती हैं कि ऐसा दुबारा मत करना।

सीख- हमें कभी भी सिर्फ अपने बारे में नहीं सोचना चाहिए, दूसरों के बारे में भी सोचना चाहिए।

- रुचि गौतम 8-द

कोरोना

हम बच्चों ने ठाना है,
कोरोना को भगाना है ।
कोरोना से कैसे बचना है,
ये सबको समझाना है ।
हाथ ना किसी से मिलाना है,
ना ही गले लगाना है।
मुँह पर अपने मास्क रखेंगे,
दूर से ही बात करेगें।
हर घण्टे पर हाथ घुलेंगे,
पानी हल्का गरम पियेंगे।
हाथ को मुँह से दूर रखेंगे,
साफ होकर घर में घुसेंगे।
कोरोना को हराना है।
हम बच्चों में ठाना है।

संकलनकर्ता- अरव राय 1-अ

किसानों की पीड़ा

एक किसान है हैरान,
अपनी जरूरतों से है परेशान ।
देश कैसा अनोखा है,
अन्नदाता ही भूखा है।।
सींचे अपने खून से धरती,
घर में उसके मालामाल,
उगाने वाला है कंगाल ।।
मन में पीड़ा बहुत है भाई,
देता नहीं क्यों सबको दिखाई ।
ऐसा ही अगर चलता रहा,
किसान यूँ ही जो मरता रहा ।
कहाँ से लाओगे अन्न का दाना,
छोड़ संसार तुम्हें होगा जाना।।
किसानों की व्यथा को अब तो जानो तुम
उसके दर्द को अपना दर्द मानो तुम ।

संकलनकर्ता आरुषी यादव ८-स

"नारी सशक्तिकरण एक सच्चाई

"तू खुद की खोज में निकल तू किसलिए हताश है, तू चल तेरे वजूद की, समय को भी तलाश है ।
जो तुझसे लिपटी बेड़ियाँ ,समझ न इनको वस्त्र तू ,ये बेड़ियाँ पिघला कर ,बना ले इनको शस्त्र तू ।
चरित्र जब पवित्र है,तो क्यूं है ये दशा तेरी ,ये पापियों को हक़ नहीं, कि ले परीक्षा तेरी।।
जला के भस्म कर उसे ,जो क्रूरता का जाल है ,तू आरती की लौ नहीं ,तू क्रोध की मशाल है।

आज भारत देश की नारी अपनी स्वतंत्रता, निजता और स्वंय के फैसले लेने के लिए पुरुषों से आजाद हो चुकी है । आज भारत जिस स्थान पर है उसमें महिलाओं की भागीदारी अमूल्य है। हम सब के जीवन में नारी कभी माँ ,कभी बहन, तो कभी बेटी के रूप में महत्वपूर्ण किरदार निभाती है, वहीँ हम उनकी अहमियत को नजर अंदाज नहीं कर सकते हैं ।

नारी सशक्तिकरण कोई आज का विषय नहीं है । नारी को जब जब मौका मिला ,उसने अपने को साबित किया है। अगर मैं बात करूँ प्राचीन समय की ,तो प्राचीन समय में भी इतनी महिलाएं हैं कि इतिहास के पन्ने उनके नामों से भरे पड़े हैं ।

ललिता, विशाखा, राधा-रानी बेटी होती नहीं ,यशुदा दुलारे नन्द नंदन नाचता कौन,
अनुसुइया जैसी बेटी तप साधिका न होती,पालने में ब्रह्मा,विष्णु,रूद्र को झुलाता कौन,
सती सावित्री न होती, तो सत्यवान को बचाता कौन,

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात जहाँ महिलाओं की पूजा होती है, वहां देवता वास करते है। नारी वह मातृशक्ति है, जिसकी शक्ति का परिचय मात्र आप इस बात से लगा सकते हैं कि पति का देश की खातिर बलिदान हो जाने के बाद भी ,भारत माँ का उस अकेली संतान पर अधिकार ज्यादा है ,यह सोचकर अपने एकलौते पुत्र व सहारे को भी सेना में भेज देती है । ***अतः नारी नि: शक्त कैसे है ?***

जहाँ एक नारी सामान्य बालक को छत्रपति शिवाजी बना देती है । कभी पति धर्म निभाने पर आये तो, आँखों पर पट्टी लगा लेती है , कभी बच्चे को बाँध कर रण-भूमि में उतर जाती है । इस देश की मातृशक्ति ने भगत सिंह ,इंदिरा गाँधी, वीर अब्दुल हमीद,कल्पना चावला जैसी संतान पैदा की है । एक सशक्त माँ ही, सशक्त संतान को जन्म दे सकती है । काम नहीं है मर्दों का,यह तो सिर्फ एक नारी ही कर सकती है ।

कुछ लोग नारी की पुरुषों से तुलना कर तुच्छ समझने की भूल कर देते है, किन्तु मैं यह स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि नारी की गरिमा पुरुषों से कहीं अधिक ऊँची है। अगर आप नारी को तुच्छता के भाव से देखेंगे तो वह आपके नज़रिये को बदलने की हिम्मत रखती है और यह हकीकत है ।

आज नारी सशक्तिकरण एक सच्चाई बन चुकी है। एक समय था पुलिस, आर्मी, एयर फ़ोर्स,कोमर्शियल पायलट,यह सब पुरुषों के एकाधिकार क्षेत्र थे । आज महिलाएं आर्मी में युद्ध के मैदान में ड्यूटी कर रही हैं ,जहाज उड़ा रही हैं, अंतरिक्ष जा रहीं है ,कृतिम पैर से एवेरेस्ट को फतह कर रहीं है।

जिम्मेदारियों का बोझ ,परिवार पे पड़ा तो ,ऑटो ,रिक्शा ट्रेन को चलाने लगी बेटियाँ ,
साहस के साथ अंतरिक्ष तक भेद डाला ,सुना वायुयान भी उडाने लगी बेटियाँ ।
और कितने उदहारण ढूँढ कर लाऊँ ,हर क्षेत्र, शक्ति, आजमाने लगी बेटियाँ ,
वीर की शहादत पर अर्थी को कान्धा दे के ,अब श्मशान तक जाने लगी बेटियाँ ।।

नेहा शुक्ला 12 ई

शिक्षा

हर ओर छाया जो तम है
उसमें जुगनू सा बन
प्रकाश की उम्मीद लानी है.
बुझे हुए दीपों में नई आस जगानी है।
शिक्षा से ही सब संभव होगा
यह विश्वास देकर सबको
नवयुग को करना है साकार
दुनिया के कोने कोने से
अब दूर करना है अंधकार।
सभ्य असभ्य की दूरी को
शून्य कर आगे बढ़ना है
अज्ञान को ज्ञान की राह पर
साथ मिल हमको बढ़ना है।
जन जन का उत्थान हो ।
शांति, सुख और समृद्धि
शिक्षा से ही आएगी
समभाव और एकता
शिक्षित सामाज से आएगी
हर नकारात्मकता को कर दूर
सकारात्मकता का करना है संचार
शिक्षित होकर ही उपजेंगे
जन-जन में ऐसे विचार।

- राहुल कुमार साह , *12 'अ'*

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव : नए विचारों का अमृत

"दिलों में बसा एक सपना था, आजादी के मतवालों का !
जश्न है यह भारत के आजाद 75 सालों का!!

आजादी का अमृत महोत्सव का अर्थ है - नए विचारों का अमृत । यह एक ऐसा महोत्सव है जिसका अर्थ - स्वतंत्रता की ऊर्जा का अमृत है अर्थात क्रांतिकारियों, स्वतंत्रता सेनानियों, देशभक्तों की गाथाओं का ऐसा अमृत जो हमें सदैव देश के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देता है हमारे मन में नए विचारों नए संकल्पों की क्रांति लाता है ।

आजादी के महोत्सव का उद्देश्य देशभर में एक अभियान चलाकर देशभक्ति की भावना का प्रसार करना है गुमनाम शहीदों की गाथाएं जनसामान्य तक पहुंचाना है।

आजादी का अमृत महोत्सव का उद्देश्य भारत को देश भक्ति के रंग में रंगना है इस अभियान के तहत स्कूलों में कार्यालयों में अनेक कार्यक्रम जैसे- खेल, गीत, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पोस्टर, बैनर के माध्यम से देश भक्ति की भावनाओं को प्रचारित एवं प्रसारित करना है।

आजादी का अमृत महोत्सव स्वतंत्र भारत के 75 वर्ष पूर्ण होने की खुशी में जश्न मनाने और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद करने के लिए भारत सरकार की एक पहल है क्योंकि महात्मा गांधी ने 12 मार्च 1930 को देश की आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान की जागृति के लिए साबरमती आश्रम से दांडी यात्रा शुरू की थी और इस दिन 2021 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी प्रतीकात्मक दांडी यात्रा की शुरुआत की है जो हमारी आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान के पुनरुत्थान का प्रतीक है। इसीलिए आजादी के अमृत महोत्सव की आधिकारिक यात्रा 12 मार्च 2021 को साबरमती आश्रम से शुरू हुई क्योंकि 15 अगस्त 2022 को हमारे भारत देश के आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो जाएंगे आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के 75 सप्ताह पूर्व हमारे देश की सरकार ने आजादी के अमृत महोत्सव की शुरुआत कर दी है।

आजादी का यह अमृत महोत्सव 15 अगस्त 2023 तक चलता रहेगा आने वाले 75 सप्ताह में देश के विभिन्न राज्यों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा और आजादी का जश्न मनाया जाएगा।

आजादी के इस जश्न को मनाते हुए हम भारतवासी अपने इतिहास के पन्नों को एक बार फिर से पलटेंगे और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हुई सभी महत्वपूर्ण घटनाओं, आंदोलन और महान क्रांतिकारियों के विषय में जानेंगे। इस महोत्सव के कारण हम सभी को यह सुनहरा अवसर मिला है कि हम आजादी के उन रखवालों के बारे में भी जान सकेंगे जो इतिहास में कहीं खो गए हैं।

हमारे प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी का यह प्रयास बेहद सराहनीय है । इस महोत्सव को जन उत्सव बनाने की उनकी परिकल्पना वास्तव में प्रशंसनीय है।

रितु पटेल 9-अ

आज़ादी के नायक

आजादी के अमृत महोत्सव के स्वर्णिम विषय पर आज हमारे देश के ख्यातनाम स्वतंत्रता सेनानियों के अलावा भी कुछ ऐसे बहुत से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे हैं जिनके नाम इतिहास की किताबों के पन्नों से गायब हैं। या लोग इन लोगों के बारे में बहुत कम जानते हैं, ऐसे ही कुछ गुमनाम स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों और शहीदों से आपका परिचय कराना चाहता हूँ। ये भी हमारे नायक हैं लेकिन ये गुमनामी के अंधेरे में रहे हैं । उन्होंने कभी इस बात की चिंता नहीं की कि वे प्रसिद्ध हुए या गुमनाम बने रहे क्योंकि उन सभी का उद्देश्य देश को आजादी दिलाना था। इस देश के नागरिक होने के कारण हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम उन स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में भी जानें जोकि गुमनामी में रहते हुए देश सेवा का अपना काम करते रहे:-

1. मातंगिनी हाजरा- एक ऐसी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थी जिन्होंने भारत छोडो आंदोलन और असहयोग आंदोलन के दौरान भाग लिया था। एक जुलूस के दौरान वे भारतीय झंडे को लेकर आगे बढ़ रही थीं और पुलिसकर्मियों ने उन पर गोली चला दी। उनके शरीर में तीन गोलियां लगीं फिर भी उन्होंने झंडा नहीं छोड़ा और वे 'वंदे मातरम्' ने नारे लगाती रहीं।

2.बेगम हजरत महल-अवध के नवाब की पत्नी बेगम हजरत महल 1857 के विद्रोह की सक्रिय नेता थीं। जब उनके पति को देश से बाहर निकाल दिया तो उन्होंने अवध का शासन संभाल लिया और विद्रोह के दौरान उन्होंने लखनऊ को अंग्रेजी नियंत्रण से छीन भी लिया था। लेकिन विद्रोह के कुचले जाने के बाद बेगम हजरत महल को भारत छोड़कर नेपाल में रहना पड़ा, जहां उनका देहांत हुआ था।

3. सेनापति बापट- सत्याग्रह के एक नेता होने के कारण उन्हें सेनापति कहा जाता था। स्वतंत्रता के बाद पहली बार उन्हें पुणे में भारतीय ध्वज को फहराने का सम्मान मिला था। तोड़फोड़ और सरकार के खिलाफ भाषण देने के कारण उन्होंने खुद की गिरफ्तारी दी थी। वे एक सत्याग्रही थे जोकि हिंसा का मार्ग नहीं चुन सकता था।

4.अरुणा आसफ अली- बहुत ही कम लोगों ने उनके बारे में यह सुना होगा कि जब वे 33 वर्ष की थीं तब उन्होंने सन् 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गोवालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्वज फहराया था।

5.भीकाजी कामा- देश के कई शहरों में उनके नाम पर बहुत सारी सड़कें और भवन हैं लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि वे कौन थीं और उन्होंने क्या काम किया? कामा ने न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया वरन वे भारत जैसे देश में लैंगिक समानता की पक्षधर एक नेता थीं। उन्होंने अपनी सम्पत्ति का एक बड़ा भाग लड़कियों के लिए अनाथालय बनाने पर खर्च किया था। वर्ष 1907 ई. में उन्होंने इंटरनेशनल सोशलिस्ट कॉन्फ्रेंस, स्टुटगार्ट (जर्मनी) में भारत का झंडा फहराया था।

6.पोटी श्रीरामुलू- वे महात्मा गांधी के कट्टर समर्थक और भक्त थे। जब गांधीजी ने देश और मानवीय उद्देश्यों के प्रति उनकी निष्ठा देखी तो कहा था कि 'अगर मेरे पास श्रीरामुलू जैसे 11 और समर्थक आ जाएं तो मैं एक वर्ष में स्वतंत्रता हासिल कर लूंगा।'

7. तारा रानी श्रीवास्तव- बिहार के सीवान नगर के पुलिस थाने पर उन्होंने अपने पति के साथ एक जुलूस का नेतृत्व कर रही थी । उन्हें गोली मार दी गई थी लेकिन वे अपने घावों पर पट्टी बाँधकर आगे चलती रहीं। जब वे लौंटी तो उनकी मौत हो गई थी। लेकिन मरने से पहले वे देश के झंडे को लगातार पकड़े रहीं।

8. कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी - उन्हें कुलपति के नाम से भी जाना जाता था क्योंकि उन्होंने भारतीय विद्या भवन की स्थापना की थी। वे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन और विशेष रूप से भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बहुत सक्रिय रहे थे। स्वतंत्र भारत के प्रति उनके प्रेम और त्याग के कारण वे अनेक बार जेल गए।

9. पीर अली खान- कमलादेवी देश की ऐसी पहली महिला थीं जिन्होंने विधानसभा का चुनाव लड़ा था। साथ ही, वे पहली ऐसी महिला थीं जिन्हें अंग्रेज शासन ने गिरफ्तार किया था। उन्होंने एक सामाजिक सुधारक के तौर पर बड़ी भूमिका निभाई और उन्होंने भारतीय महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए हस्तशिल्प, थिएटर और हैंडलूम्स (हथकरघे) को बहुत बढ़ावा दिया।

10. कमलादेवी चट्टोपाध्याय - वे भारत के शुरुआती विद्रोहियों में से एक थी और उन्होंने 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया था। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण उन्हें 14 अन्य लोगों के साथ फांसी की सजा दी गई थी।

यहाँ आज़ादी के कुछ दीवानों का जिक्र हुआ हैं परंतु ऐसे बहुत से क्रांतिकारी हुए हैं जिन्होंने अपने प्राण की चिंता न करते हुए आज़ादी की वीर गाथा में खुद को आहूत कर दिया। आज़ादी के सभी दीवानों को बारम्बार नमन ।

आनंद उपाध्याय 12-द

एक भारत श्रेष्ठ भारत

भारत एक अनोखा राष्ट्र है, जिसका निर्माण विविध भाषा, संस्कृति, धर्म के ताना बाना , अहिंसा और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित स्वतंत्रता संग्राम तथा सांस्कृतिक विकास के समृद्ध इतिहास द्वारा एकता के सूत्र में बाँध कर हुआ है । एक साझा इतिहास के बीच आपसी समझ की भावना ने विविधता में एक विशेष एकता को सक्षम किया है, जो राष्ट्रवाद की एक लौ के रूप में सामने आती है जिसे भविष्य में पोषित और अभिलषित करने की आवश्यकता है।

समय और तकनीक ने संपर्क और संचार के मामले में दूरियों को कम कर दिया है। ऐसे युग में जो गतिशीलता और आगे बढ़ने की सुविधा प्रदान करता है, विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के सामान्य दृष्टि कोण के द्वारा आपसी रिश्तो में मजबूती करना और राष्ट्र निर्माण महत्वपूर्ण है। आपसी समझ और विश्वास भारत की ताकत की नींवहै. भारत के सभी नागरिकों को सांस्कृतिक रूप से एकीकृत महसूस करना चाहिए।

31 अक्टूबर, 2015 को आयोजित राष्ट्रीय एकता दिवस के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती मनाने की घोषणा की गई थी जिसके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों के संप्रदायों के बीच एक निरंतर और संरचित सांस्कृतिक संबंध बनाये जा सके। माननीय प्रधानमंत्री ने यह प्रतिपादित किया कि सांस्कृतिक विविधता एक खुशी है जिसे विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लोगों के बीच पारस्परिक संपर्क और पारस्परिकता के माध्यम से मनाया जाना चाहिए ताकि देश भर में समझ की एक सामान्य भावना प्रतिध्वनित हो । देश के प्रत्येक राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश का एक वर्ष के लिए किसी अन्य राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश के साथ जोड़ा बनाया जाएगा, इस दौरान वे भाषा, साहित्य, भोजन, त्योहारों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पर्यटन आदि क्षेत्रों में एक दूसरे के साथ जुडेगे/ भागीदार राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश आपस में एक दूसरे को सास्कृतिक रूप से अंगीकृत करेंगे।

भारत में सभी राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों को एक पूरे वर्ष के लिए जोड़ो में निर्धारित किया गया हैं । जोड़े गए राज्य / केंद्र शासित प्रदेश एक दूसरे के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करेंगे, जो विभिन्न गतिविधियों को पूरे वर्ष भर करेंगे। प्रत्येक जोड़े के लिए एक गतिविधि कैलेंडर आपसी परामर्श के माध्यम से तैयार किया जाएगा, जिससे आपसी जुड़ाव की एक साल की लंबी प्रक्रिया का मार्गप्रशस्त होगा। सांस्कृतिक स्तर पर राज्यों / केंद्र शासित प्रदेशों के प्रत्येक जोड़े की आबादी के विभिन्न क्षेत्रों के बीच इस तरह की बातचीत, लोगों के बीच समझ और प्रशंसा की भावना पैदा करेगी और आपसी संबंध बनाएगी, जिससे राष्ट्रीय एकता की भावना में समृधि हासिल होगी।

देश की मिट्टी

इस देश की मिट्टी ने हमको,
पाला, पोसा और प्यार दिया।
स्वच्छ हवा और पानी के संग
जीने का अधिकार दिया।।

ईश्वर ने भी इस धरती को,
मन से बहुत सजाया है ।
कहीं बनी फूलों की घाटी,
कहीं सुन्दर वन फैलाया है।।

सिर पर ताज हिमालय का है,
सागर पैरों को धोता है।
देख के अद्भुत काया को,
यह विश्व अचम्भित होता है।।

बने नहीं हैं शब्द भी इतने,
कि मैं इसका गुणगान करूँ ।
बस बार-बार मैं जोड़ के कर को,
बस बार-बार मैं प्रणाम करूँ ।।

-अर्चना सिंह चौहान, प्रा. शि.

मातृ भूमि (समर्पण गीत)

मातृ मन्दिर के पुजारी वन्दना किस विधि करें।
ध्येय प्रतिमा को हृदय में आज किस विधि धरें ।

धवल हिमालय भाल तेरा साधना का है बसेरा।
मौन हो निज को गलाकर भूमि पर अमृत बिखेरा
बन ब्रहमपुत्र और सिन्धु गंगा नर्मदा कावेरी माँ
वन्दना किस विधि करें।

शस्य श्यामल तेरा मौन सेवा का बसेरा,
लक्ष्मी रूपे अन्नपूर्णा अम्बिके तू प्यारी माँ
वन्दना किस विधि करें ॥
सिन्धु तेरे चरण छूकर कर रहा यश नाद तेरा
ऋषिजनों ने ज्ञान- रवि रम धर्म किरणों को बिखेरा।
ज्ञान की मंदाकिनी तू शारदा का रूप माँ।
वन्दना किस विधि करें ।

निशा मिटी भोर आया मिट चले भ्रम के सितारे।
रिक्त का नवरूप लखकर दिशि दिशा के असुर काँपे।
महाकाले शक्ति दुर्गे असुर मर्दिनी चण्डी माँ।

वन्दना किस विधि करें।

श्वास तेरे तुझे अर्पित तन समर्पित मन समर्पित
चेतना ले दिव्य तेरी कोटि पग बढ़ चले पथ पर
ध्येय का साक्षात करने दिग्विजय कर तेरी माँ ॥
वन्दना किस विधि करें ।
संकलनकर्ता -अश्मित मणि त्रिपाठी 10-द

संस्कृत विभाग

जीवनस्य साफल्यम्

वाणी रसवती यस्य , यस्य श्रमवती क्रिया ।
लक्ष्मी: दानवती यस्य , सफलं तस्य जीवितम् ।।
अर्थात् जिस मनुष्य की वाणी मधुर होती है , जिसका कार्य परिश्रम पूर्वक होता है और जिसके धन का उपयोग दान के लिए होता है उसी का जीवन सफल होता है ।

आर्या श्रीवास्तवा , अष्टमी - द

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचारेत् ।

गीतामृतम्

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय॥

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

हतो वा प्राप्यसि स्वर्गम्, जित्वा वा भोक्ष्यसे महिम्।
तस्मात् उत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चय:॥

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

क्रोधाद्भवति संमोह: संमोहात्स्मृतिविभ्रम:।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन:।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

नैनं छिद्रन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत॥

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत:।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे॥

संकलनकर्ता – अक्षत मिश्र कक्षा - 8 द

बीरबलस्य स्वामिभक्तिः

एकदा बादशाह :अकबरः बीरबल : च उद्याने उपविशतः स्म।तंत्र तौ अनेकानां फलानां विषयेवार्तां कुरुतः स्म । एकदा बादशाह : अकबर : आम्रणाम् प्रशंसाम् अकरोत् बीरबल : च अनुमोदनम् अकारोत्। कालानन्तरं बीरबलस्य परीक्षायै अकबर : तम् आह्वयत्। राजसभायाम् अकबरः आम्रणाम् निंदाम् अकारोत्। बीरबलः तस्यापि अनुमोदनम् अकरोत्। बादशाहः अकबरः क्रुद्धः भूत्वा अवदत् – बीरबल ! पूर्वं यदा अहं आम्रणाम् प्रशंसा अकुर्वम् तदा त्वं अनुमोदनम् अकरोः । इदानीं अहं आम्रणाम् निन्दां करोमि , तदापि त्वम् अनुमोदनम् एव करोषि। बीरबल : हसन् अवदत् – महोदय ! अहं तु तव सेवकः अस्मि, आम्रणाम् नास्मि। अकबरः अपि बीरबलस्य स्वामिभक्तिं दृष्ट्वा अहसत् बीरबलम् अप्रशंसत् च ।

द्वारा – माहिका तिवारी
नवमी – अ

जननी

जननि ! संसारस्य त्वम् अनुपमः उपहारः ।
न त्वत् सदृशः कस्याः अपि स्नेहः ।।
करुणा - ममतायाः साक्षात्प्रतिमूर्तिः त्वम् ।
न कोऽपि सक्षमः तव क्षतिपूर्तिकर्तुम् ।।
तव चरणयोः मे जीवनाधारः ।
" अम्बा " शब्दस्य महिमा अपरम्पारः ॥
त्वमेव मम जीवनस्य सारः ।
जननि ! संसारस्य त्वम् अनुपमः उपहारः ।।

उत्सव कुमार यादव :
अष्टमी – द

एहि एहि वीर रे

एहि एहि वीर रे
एहि एहि वीर रे
वीरतां विधेहि रे
भारतस्य रक्षणायजीवनं प्रदेहि रे ।।

त्वं हि मार्गदर्शक:
त्वं हि देशरक्षक
त्वं हि शत्रुनाशक
कालनागतक्षक: ||
साहसी सदा भवे:
वीरतां सदा भजे:
भारतीयसंस्कृतिं
मानसे सदा धरे: ||
पदं पदं मिलञ्चलेत्
सोत्साहं मनो भवेत्
भारतस्य गौरवाय
सर्वदा जयो भवेत् ||
संकलक: - ऋषभ कुमार :
सप्तमी - ब

मनसा सततम् स्मरणीयम्

मनसा सततम् स्मरणीयम्
वचसा सततम् वदनीयम्
लोकहितम् मम करणीयम्||
न भोग भवने रमणीयम्
न च सुख शयने शयनीयम्
अहर्निशम् जागरणीयम्
लोकहितम् मम करणीयम्||
न जातु दु:खम् गणनीयम्
न च निज सौख्यम् मननीयम्
कार्य क्षेत्रे त्वरणीयम्
लोकहितम् मम करणीयम्||
दु:खसागरे तरणीयम्
कष्ट पर्वते चरणीयम्
विपत्ति विपिने भ्रमणीयम्
लोकहितम् मम करणीयम्||
गहनारण्ये घनान्धकारे
बन्धुजना ये स्थिता गह्वरे
तत्र मया सञ्चरणीयम्
लोकहितम् मम करणीयम्||
संकलनकर्त्री - श्रेया तिवारी, सप्तमी - अ

English Section

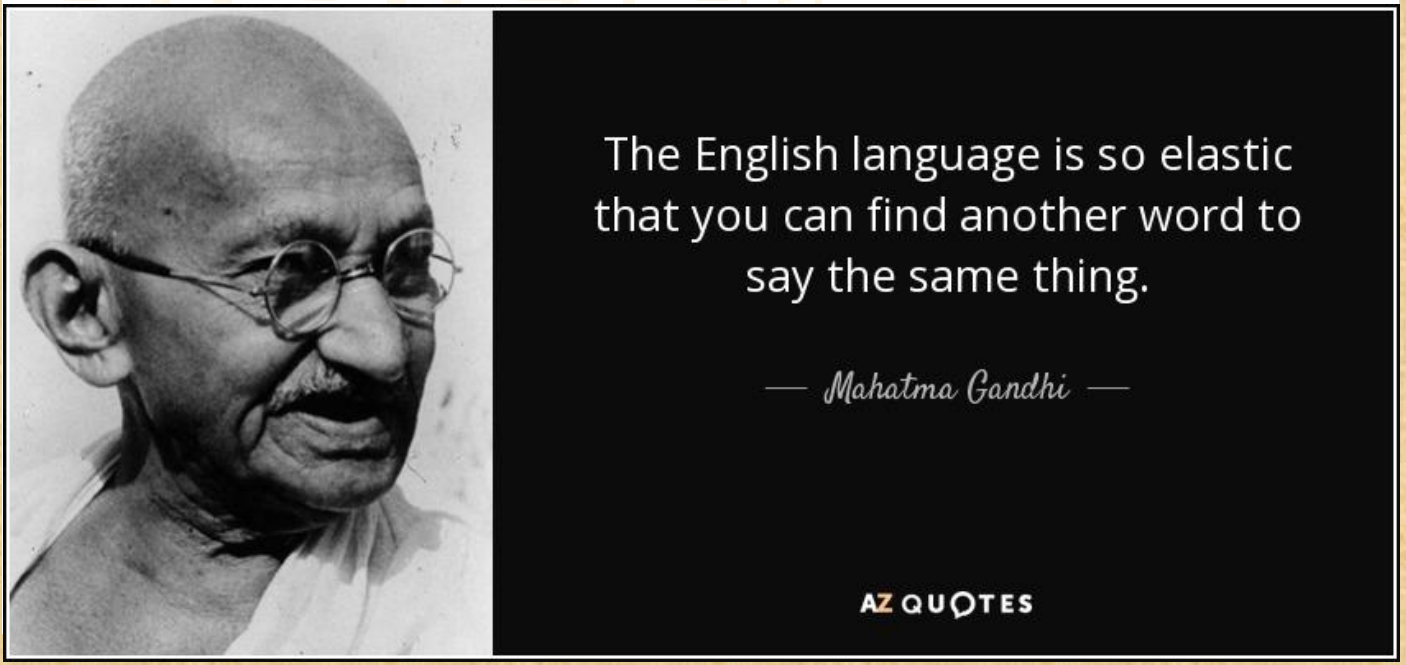

"The Peace that God Brings"

When hearts are sad and minds are dull
And happiness takes its wings
The world around looks grey and grim
We need the peace that God brings.

When people light and hatred reigns in countries and their kings;
When no one else can help them then
They need the peace that God brings.

When I am hurt by cruel hands
And a cruel word that stings
When matching else can soothe me then
I need the peace that God brings.

If hearts are full of greed and lust
And hate and such like things:
We may seek comfort elsewhere but
We need the peace that God brings

God gives us life and health and friendship,
A mind to think a voice that sings.
But the gift I have the most of all is
The gracious peace that God brings.

But where to find this Lord of Peace?
To my inner most heart he clings.
I seek Him there, and then I find
The precious peace that God brings

Shreya, Class-7A

Self Impowered Woman

Born in India,

The country of gold

Empowered by culture

Brave and bold.

Dreams are endless,

Passion is pure,

Toughness is in me,

Struggle will endure.

Stop blaming me for misfortune,

'Cause I am iron-willed.

The more you push me down,

I will thrive, but your intentions will be killed.

I stopped your swords as Lakshmi Bai,

I tackled your words as Matreiyi,

Society put the lock,

I always had the key.

I have the power,

I show concern,

Accept my strength,

Elixir will be churned

By- Mahika Tiwari

IX A

World Earth Day

Kids for saving earth

The earth is my home

I promise to keep it,

Healthy and beautiful

I will love the land, the air,

The water and all living creatures.

I willl be a defender

Of my planet,

United will friends

I will save the Earth 🌍.

Aditya Saha Class-Vl D

Care Yourself

Keep attention of sanitation

Rather stinging injection

Devil of germs are

Ready for attacks

When You eat stale

Pizza ,snacks

I always try to mention

Do not keep foul intention

Not to take load of tension

Let be free the body function

Clean outside, clean inside

Clean all your soul

Keep in mind large target

Eyes on your goal

No supreme power may sanction

Harmful germs disease infection.

Keep attention of sanitation

Rather stinging injection.

Venus Srivastava 8 B

Believe in Yourself

There is time in life

When you feel dejected by struggle and strife

No guilt to work, no hope to rise

Fear of failure in your heart dies.

But failures are only stepping stones

Not a place you to stay

Habit of blaming fate is only of loser ones

A winner believes in himself and all fears go away

In your troubles, don't cry

All you should do is try and try

With your skills, power of will

Struggle hard and conquer the sky.

Don't wait outside destiny's gate

But go ahead and reach your goal

Remember you are the master of the fate

You are the captain of your soul.

THE SONG OF THE FREE

The wounded snake its hood unfurls,
The flame stirred up doth blaze,
The desert air resounds the calls;
Of heart -strured up doth.

The cloud puts forth its deluge strength
When lightning cleaves its breast,
When the soul is stirred to its
Great ones unfold best !

Let eyes grow dim and hearts grow faint
And friendship fail and love betray
.Let fate its hundred horrors send
And clotted darkness block the way--

And nature were an angry frown
To crush you out---- still know my soul,
You are divine, march on and on
Nor right no left , but to the goal.

SOMYA YADAV
CLASS- 7th A

A SMILE

A SMILE IS QUITE A FUNNY THINGS,

IT WRINKLES UP YOUR FACE.

AND WHEN IT'S GONE

YOU'LL NEVER FIND

IT'S SECRET HIDING PLACE.

BUT FOR MORE WONDERFUL IT IS

TO SEE WHAT SMILES CAN DO.

YOU SMILE AT ONE,

HE SMILES AT YOU,

AND SO ONE SMILE

MAKES TWO.

NAME: ANJALI

CLASS:10 D

DON'T QUIT

WHEN THINGS GO WRONG AS THEY SOMETIMES WILL;
WHEN THE ROAD YOU'RE TRUDGING SEEMS ALL UPHILL;
WHEN THE FUNDS ARE LOW, AND THE DEBTS ARE HIGH;
AND YOU WANT TO SMILE, BUT YOU HAVE TO SIGH;
WHEN CARE IS PRESSING YOU DOWN A BIT
REST IF YOU MUST, BUT DON'T YOU QUIT.

Fun Fact
#1 - Cockroach can live for up to 1 week
without its head

#2 - A teaspoon of neutron star would weight
6 billion tons

#3 - Sunflower are known as hyperaccumulators
and they can be used to clean up radiation

- Aakash Mandal
Class- 8th 'B'

Top 10 Interesting Facts About Amazon Rainforest.

- Amazon is the world's largest tropical rainforest. It's covering over 5.5 million square kilometers.
- Most Scientists agree that the Amazon River is the world's second longest river after Nile River.
- The Amazon Rainforest is found in South America.
- The Amazon Rainforest is known as the lungs of the Earth because it produces more than 20% of the worlds oxygen.
- There are aruond 40,000 plant species, 1,300 birds species, 3,000 types of fishes, 430 mammals and 2.5 million different insects.
- There are also many deadly animals including Electric Eels, Piranhas, Poision dart frog, Jaguars and some venomous snakes.
- The loudest animal in the rainforest is tucan, It can be heard from almost at 1km away.
- The Amazon Rainforest is home to the worlds largest waterfall, The Santo Angel waterfall which is 979 meters tall.
- There are around 400-500 Tribes that call the amazon rainforest home.
- During the past 40 years, at least 20% of the amazon rainforest has been cut down.
- … Shivang Chaudhary
- VIII- D

A TEACHER IS LIKE A LAMP

- A TEACHER LIGHTENS OUR MINDS WITH KNOWLEDGE.
- A TEACHER IS LIKE A FLOWER.
- WHO INDUCES IN US THE SCENT OF EDUCATION!
- A TEACHER IS LIKE A PILLAR _
- WHO SUPPORT THE BUILDING OF PROGRESS?
- A TEACHER IS LIKE A GARDENER
- WHO CULTIVATES GOOD QUALITIES IN STUDENTS?
- A TEACHER IS LIKE A MOTHER.
- WHO LOVES EQUALLY ALL THE CHILDREN.
- A TEACHER IS LIKE A GOD,
- WHO GIVES A NEW LIFE AND NEW VERSION
- A TEACHER IS GREAT.
- A TEACHER IS LOVING.
- A TEACHER IS NOBLE.

RAJESH YADAV 12 (E)

Fun Facts About Our Body

...Collected by; Gaurav Dwivedi, XII

- Measure yourself in the morning, then again at night. You're going to be taller in the morning because of how the cartilage in your bones compresses during the day. Thanks a lot, gravity!

- Depending on your beats per minute, your heart beats about 100,000 times a day. That means it sends 2,000 gallons of blood through the body.
- The highest blood flow isn't in your heart, liver, or brain — it's in your kidneys. That's because kidneys are the body's natural filtration system.
- Though people have small blood vessels, the networking is amazingly long. If they were laid out they would measure more than 60,000 miles. Please don't do that though, it's good to keep your vessels in your body.
- Your strongest muscle is located in your jaw known as the masseter muscle. The stapedius muscle, located in the middle of your ear, is your weakest muscle.
- Your skin is vital in protection of the body against bacteria (the skin itself has 1000 different species of bacteria on it at any given time), which is why the outer layer of your skin continually renews itself. The entire process of skin cell renewal takes about 28 days

- Your strongest and longest bone is your femur. The **smallest bone is one of the ossicles which are located in the ear. One quarter of your body's bones are located in your feet.**

THE PROUD ROSE

MORAL: NEVER JUDGE ANY ONE BY THE WAY ONE LOOKS.

ONCE UPON A TIME, IN A DESERT FAR AWAY, THERE WAS A ROSE WHO WAS SO PROUD OF HER BEAUTIFUL LOOKS. HER ONLY COMPLAINT WAS GROWING NEXT TO AN UGLY CACTUS. EVERY DAY, THE BEAUTIFUL ROSE WOULD INSULT AND MOCK THE CACTUS ON HIS LOOKS, ALL WHILE THE CACTUS REMAINED QUIET. ALL THE OTHER PLANTS NERALY TRIED TO MAKE THE ROSE SEE SENSE, BUT SHE WAS TOO SWAYED BY HER OWN LOOKS. ONE SCORCHING SUMMER, THE DESERT BECAME DRY, AND THERE WAS NO WATER LEFT FOR THE PLANTS. THE ROSE QUICKLY BEGAN TO WILT. HER BEAUTIFUL PETALS DRIED UP, LOSING THEIR LUSH COLOUR LOOKING TO THE CACTUS, SHE SAW A SPARROW DIP HIS BEAK INTO THE CACTUS TO DRINK SOME WATER. THOUGH ASHAMED, THE ROSE ASKED THE CACTUS IF SHE COULD HAVE SOME WATER. THE KIND CACTUS READILY AGREED, HELPING THEM BOTH THROUGH THE TOUGH SUMMER, AS FRIENDS.

..... Anjali

Class:10 D

प्राथमिक विभाग

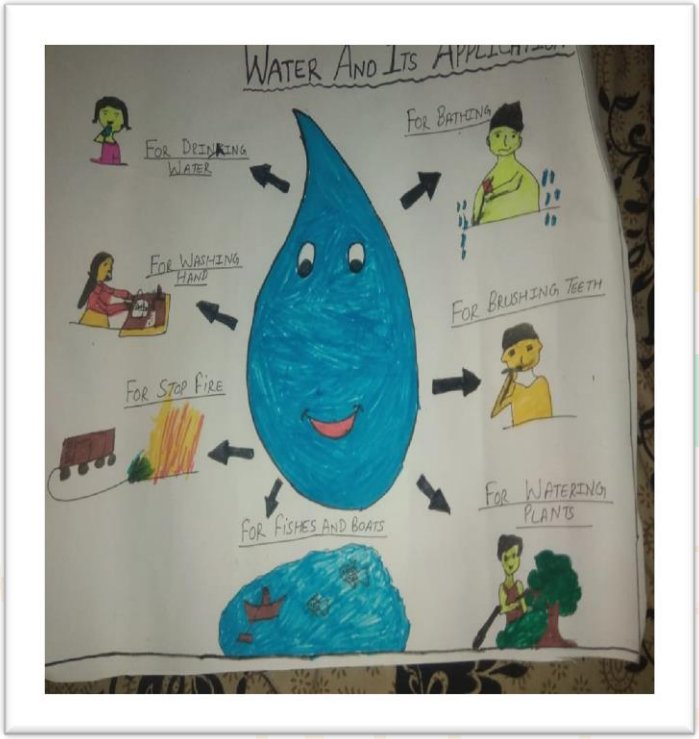
WATER AND ITS
FOR DRINKING WATER
FOR BATHING
FOR WASHING HAND
FOR BRUSHING TEETH
FOR STOP FIRE
FOR WATERING PLANTS
FOR FISHES AND BOATS

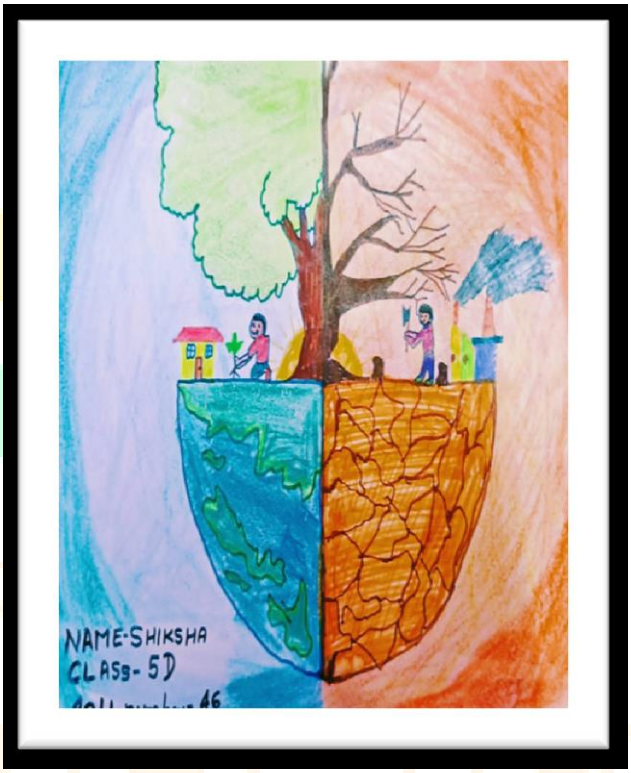
NAME-SHIKSHA
CLASS-5D

HAPPY
JANMASHTAME

HAPPY TEACHERS DAY
One book, One pen, One child, and one teacher can change the world.
HAPPY TEACHERS DAY

Happy
I Love My Teacher's
Day
Anshika Chandra

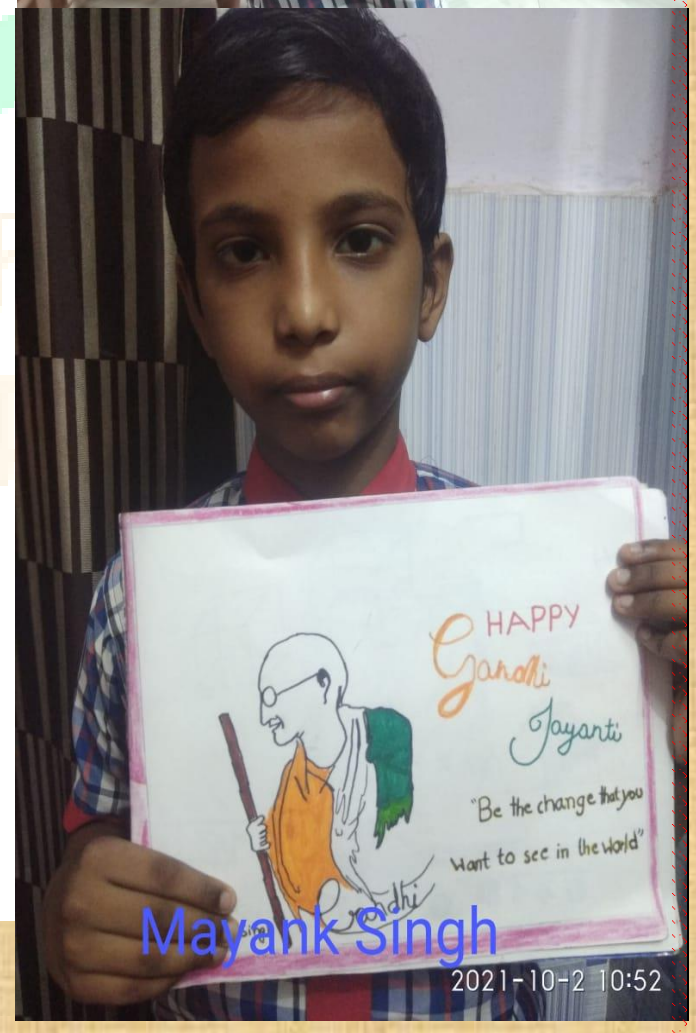

HAPPY Gandhi Jayanti
"Be the change that you want to see in the world"
Mayank Singh
2021-10-2 10:52

विविध गतिविधियों के छायाचित्र

स्वतंत्रता दिवस समारोह

हिंदी पखवाड़ा	जन उत्सव

NATIONAL CHILDREN'S SCIENCE CONGRESS

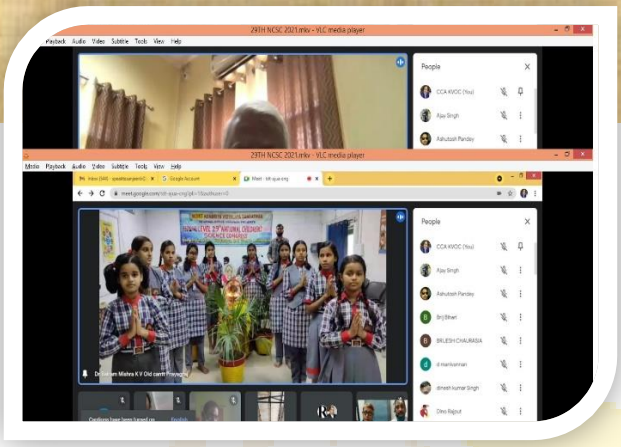

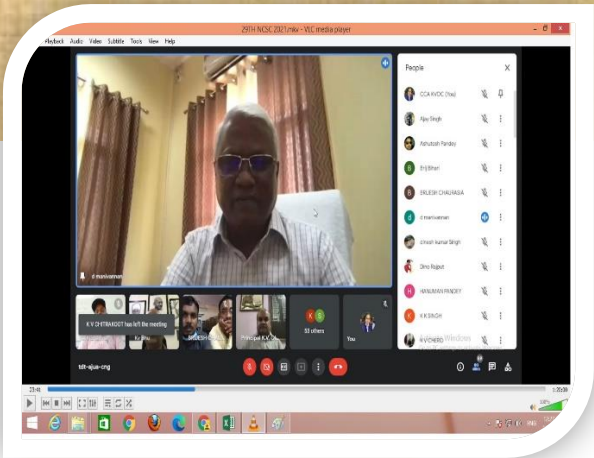

शिक्षक पर्व

चिंतन दिवस

संस्कृत सप्ताह

मातृभाषा दिवस

MEETING OF VIDYALAYA MANAGEMENT COMMITTEE

प्रार्थना सभा

विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए श्री बी. दयाल (सहायक आयुक्त)

औचक निरीक्षण हेतु श्री बी. दयाल (सहायक आयुक्त) का विद्यालय आगमन

एक भारत श्रेष्ठ भारत

स्वच्छता शपथ

संगत राज्य परियोजना कार्य

भाषा संगम

संगत राज्य काव्य पाठ

.....Young Soldiers.....

.....Young Soldiers.....

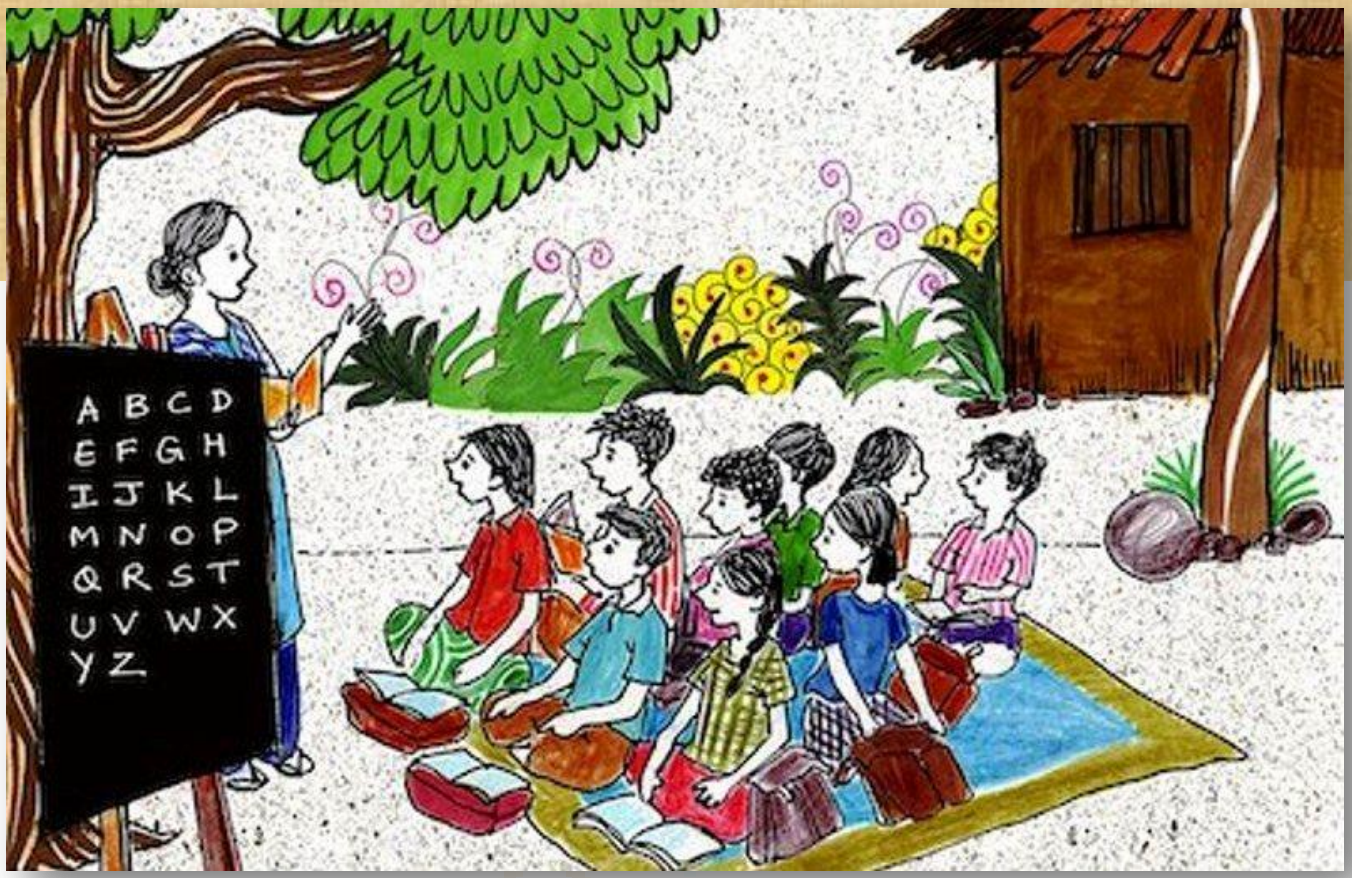

Live as if you were to die tomorrow. Learn as if you were to live forever.

- Mahatma Gandhi

"ऐसे जियो जैसे कि तुम्हे कल मर जाना हो .ऐसे सीखो जैसे कि तुम्हे हमेशा के लिए जीना हो." महात्मा गांधी